डॉ. अनूप वशिष्ठ के गजलों में पर्यावरण विमर्श

डॉ. अलका निकम-वागदरे
सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग
विलिंग्डन महाविद्यालय, सांगली
भ्रमणध्वनि – 8483926423
E-mail – alkanikamwagdare@gmail.com

सारांश–

पर्यावरण का यह जो नुकसान हुआ है या हो रहा है वह केवल एक दिन में नहीं हुआ सालों से हम प्रकृति का दोहन कर रहे है। विश्व गाँव और विकास के नाम पर फैलाई गयी गंदगी का प्रभाव अब स्थानिक नहीं वैश्विक हो गया है। अगर हम प्रकृति का संतुलन नहीं रखेंगे, अपने स्वार्थ के लिए प्राकृतिक संपदा का असीम उपयोग करेंगे तो उसका परिणाम जीवन का अंत ही है। जो बात छोटी सी ग्रेटा थनबर्ग (स्विडन), लायसी प्रिया कांबूजम (मणिपुर), गर्विता गुल्हाटी, स्नेहा शशी (बेंगलुरू) जानती और समझती है वह हम क्यों नहीं समझते ?

बीजशब्द – पर्यावरण, नगरीकरण, औद्योगिकीकरण विकास, प्रदूषण

मानव जीवन एवं पर्यावरण एक दूसरे के पर्याय हैं। जहाँ मानव जीवन का अस्तित्व पर्यावरण से है वहीं मानव व्दारा निरंतर किए जा रहे पर्यावरण के विनाश से सम्पूर्ण मानव जीवन को भविष्य की चिंता सताने लगी है। हिंदी साहित्य में पर्यावरण विमर्श पर अब गहरा चिंतन, लेखन हो रहा है। 'पर्यावरण' शब्द अत्यंत व्यापक है। इसके अंतर्गत पूरा ब्रम्हांड समाया हुआ है। "सामान्यतः प्राकृतिक व्यवस्था को ही पर्यावरण कहते हैं। इसमें पृथ्वी, जल, वायु, पेड-पौधे, जीव-जन्तु तथा अन्य जीवधारी आते हैं। यदि विज्ञान की भाषा में कहें तो पर्यावरण से तात्पर्य उस समूची भौतिक एवं जैविक व्यवस्था से है जिसमें जीवधारी रहते हैं, पोषण पाते हैं, वृध्दि करते हैं और अपनी स्वाभाविक अन्य प्रवृत्तियों का विकास करते हैं।"[1] पर्यावरण का संबंध किसी एक देश से नहीं है सम्पूर्ण विश्व से है। जैसे-जैसे भारत आधुनिकता की ओर बढता जा रहा है वैसे-वैसे पर्यावरण की हानी हो रही है। वास्तव में प्रकृति हमारी पोषक है, रक्षक है, जीवनदायिनी है। हम इस प्रकृति की सन्तान हैं, स्वामी नहीं। प्रकृति से छेडछाड पूरे जीवमण्डल के लिए खतरा है। बढती जनसंख्या, जनसंख्या बढने से निर्मित आवास की समस्या ने, बढती आवश्यकताओं ने प्रकृति के साथ सहयोग के स्थान पर संघर्ष के लिए उत्साहित किया।

सन 1991 के बाद आये नगरीकरण और औद्योगिकीकरण के नाम पर अंधाधुंद काटे गये जंगल, भूमि अपरदन, भस्खलन, भूकंप, बाढ जैसी समस्याओं का प्रकोप बढ गया है। विकास की अंधी दौड में हमने सुख-सुविधाओं के लिए महलों का निर्माण किया वहीं पर्यावरण को हानी पहुँचाकर अपने पैरों पर कुल्हाडी मार ली। मनुष्य ने विकास के नाम पर जो प्रकृति का दोहन किया है उसका परिणाम तो हमें भोगना ही पडेगा। प्रकृति से अगर मानव छेडछाड करेगा तो प्रकृति उसका बदला लेकर ही रहेगी। हमने समझा कि प्रकृति हमारे उपभोग के लिए हैं, अतः उसे लूटना-खसोटना हमारा अधिकार है पर हमसे यही भूल हो गई। पहले हमारी नदियाँ स्वच्छ, निर्मल पानी का स्त्रोत हुआ करती थी। मगर आज अत्यधिक गंदगी के कारण नदियाँ प्रदूषित बन चुकी है। इसका परिणाम मानव-जीवन के साथ-साथ जानवरों पर भी हो रहा है। हमारी गंगा, यमुना, कावेरी, गोदावरी, ब्रम्हपुत्रा जैसी बडी-बडी नदियाँ इसकी चपेट में आ चुकी है। आज बडे पैमाने पर गंगा, यमुना, नर्मदा, कावेरी जैसी नदियों को बचाना जरूरी है। इनके बारे में – 'नर्मदा बचाव', 'गंगा बचाव योजना' जैसी योजनाएँ जारी है जिसमें जापान हमारी मदद कर रहा है। अगर समय के रहते हमने इस पर ध्यान नहीं दिया तो निश्चित ही आनेवाली पीढी के लिए यह चिंता का विषय है। गजलकार डॉ. अनूप वशिष्ठ चिंतित होकर लिखते हैं -

यह तो कुएँ का नीर है पी सकता हूँ इसे
अच्छा है कि लोटे में गंगाजल नहीं हुआ[2]

ओडम के अनुसार "वातावरण के अथवा जीवमंडल के भौतिक, रासायनिक व जैविक गुणों के ऊपर जो हानिकारक प्रभाव पडता हैं, प्रदूषण कहलाता है।"[3] प्रदूषण से पर्यावरण की असहनीय हानी होती है। डॉ. अनूप वशिष्ठ जी लिखते हैं-

नदी को प्यार के बदले अगर हम विष पिलायेंगे
तो एकेक बूंद पानी के लिए हम तरस जाएंगे।[4]

नागरीकरण, औद्योगिकरण, बढती जनसंख्या, जनसंख्या की अधिकता के कारण निर्माण आवास की समस्या, आवासों की पूर्ति के लिए जंगलों को काटना, प्राकृतिक संपदाओं का अत्याधिक उपयोग करना जैसी कई समस्याएँ निर्माण हो रही है। जल

के बिना मनुष्य और प्राणियों की भी कल्पना हम नहीं कर सकते। आज की तारीख में किसी भी हालात में हमें पानी को बचाना ही होगा। पूरे विश्व में दक्षिण अफ्रिका का केपटाऊन यह शहर पहला पानी विरहित शहर घोषित किया गया है। वहाँ की सरकार ने 14 अप्रैल, 2019 के बाद हम जनता को पानी नहीं दे सकेंगे यह स्पष्ट रूप से कहा था। इसे 'डे झिरो' कहा गया था। और सामईक रूप से पानी देना बंद कर दिया था। यह नहीं महाराष्ट्र के लातुर जिले को भी मिरज शहर से जल एक्सप्रेस व्दारा 15 लाख लिटर पानी दिया गया जो महाराष्ट्र के इतिहास में पहली घटना थी। (2016)

इसलिए आज हमें हमारी नदियों को बचाना होगा। हमारी अंधश्रध्दाओं को मिटाना ही होगा क्योंकि हम नदियों में कपडे, जानवर धोने के साथ-साथ गंगा जैसी नदी में पूरे के पूरे शव को बहाते है, मरने के बाद मनुष्य की रक्षा, अस्थियों को नदियों में प्रवाहित किया जाता है, ईश्वर पर चढाये गये फूलों को अत्यंत सहजता से नदियों में बहाया जाता है इसे रोकना ही होगा नहीं तो हमें पानी ही नहीं, स्वच्छ पानी के लिए भी तरसना पडेगा। डॉ. अनूप जी संवेदनशील गजलकार हैं हमें चेतावनी देते हुए लिखते हैं -

पानी का सम्मान नहीं करता है जो
कभी-कभी वह बेपानी हो जाता है।[5]

पर्यावरण की शृंखला में पानी एक महत्वपूर्ण कडी है जिसे बचाना हम सबका कर्तव्य है।

पशु-पक्षी संम्पूर्ण प्रकृति में रचा-बसा
पानी हर प्राणी का जीवन-दाता है।[6]

पर्यावरण का यह जो नुकसान हुआ है या हो रहा है वह केवल एक दिन में नहीं हुआ सालों से हम प्रकृति का दोहन कर रहे है। विश्व गाँव और विकास के नाम पर फैलाई गयी गंदगी का प्रभाव अब स्थानिक नहीं वैश्विक हो गया है। अगर हम प्रकृति का संतुलन नहीं रखेंगे, अपने स्वार्थ के लिए प्राकृतिक संपदा का असीम उपयोग करेंगे तो उसका परिणाम जीवन का अंत ही है। जो बात छोटी सी ग्रेटा थनबर्ग (स्विडन), लायसी प्रिया कांबूजम (मणिपुर), गर्विता गुल्हाटी, स्नेहा शशी (बेंगलुरू) जानती और समझती है वह हम क्यों नहीं समझते ?

'पर्यावरणीय असंतुलन' से हम सभी ग्रस्त है। लगातार जल, वायु, मृदा की स्वच्छता में गिरावट दर्ज हो रही है, मनुष्य का अस्तित्व खतरे में दिखायी दे रहा है। बढते 'ग्लोबल वार्मिंग' से भारत भी अछूता नहीं है। असमय आनेवाली वर्षा, बाढ, भूकंप, आकाल जैसी समस्याओं ने हमें इतना जकड के रखा है कि हमें इस कुचक्र से निकलना मुश्किल होता जा रहा है। गजलकार डॉ. अनूप वशिष्ठ लिखते हैं -

ये सूरज की किरण क्यों कर हुई आज हमलावर
जरा सोचो कि उससे किस तरह खुद को बचायेंगे[7]

प्रकृति इन्सान की जरूरतों को पूरा कर सकती है इसके लालच को नहीं।

पेड-पौधों के कारण केवल छाया ही नहीं मिलती बल्कि हमारे शरीर के लिए फल भी मिलते है, पशु-पक्षियों को आवास मिलता है। पेडों को काटने से, जंगलों को अपने स्वार्थ के लिए आग लगाने से हमारा ही नुकसान नहीं होता बल्कि पशु-पक्षियों का आशियाना टूटता है, विविध प्रजातियों का नुकसान होता है वह अलग बात है। पानी की किल्लत के कारण पक्षियों, जानवरों की मृत्यु हो रही है। पर्यावरण का चक्र व्यवस्थित चलने के लिए सभी जीव-जंतूओं की अवश्यकता है। अनगिनत वृक्षों के काटने की समस्या की ओर हमारा ध्यान खिंचते हुए गजलकार लिखते हैं -

अगर करते रहे पेडों की हत्या यूँ ही आये दिन
परिंदे कैसे चहकेंगे, कहाँ पर घर बनायेंगे[8]

विकास के नाम पर दिल्ली, मुंबई, पुणे, नागपुर जैसे शहरों में मेट्रो की सविधाएँ उपलब्ध करायी गयी। ऐसा करते समय खेत-जमीनों का अधिग्रहण किया गया, अनगिनत पेडों को काटा गया जिससे हमारी प्राकृतिक सुरक्षा खतरे में आ गयी। शहर तो विकास की दिशा में चल पडे मगर पशु-पक्षी, जानवर मर रहे है। प्रतिकुल वातावरण, खाने-पिने की कमी, नैसर्गिक आवास की समस्या के कारण स्थानांतरण जैसे कई समस्याएँ निर्माण हुई। गजलकार अत्यंत संवेदना के साथ इसका चित्रण करते हैं-

कटते पेडों से लिपटकर कहा परिन्दों ने
तुम्हारे बाद कहाँ हम पनाह पायेंगे[9]

मनुष्य की भोगवादी प्रवृत्ति ने पूरे विश्व को खतरे में डाल दिया है। सडक निर्माण के लिए पेडों का कटना, बिजली बनाने के लिए नदियों पर बडे-बडे बाधों का निर्माण, प्राकृतिक खनिजों को खोजने के लिए धरती पर जोर-शोर से किया जानेवाला उत्खनन, मल्टीनेशनल कंपनियों व्दारा किया जानेवाला उत्खनन, उत्खनन के लिए बडी-बडी मशिनों व्दारा खुदाई, उससे निर्मित वायु प्रदूषण और धुँवा, कचरा ये सभी चिंता के विषय है। गजलकार डॉ. अनूप वशिष्ठ चिंतित होकर लिखते हैं -

हवाओं मे जहर घुलता रहा गर दिन-ब-दिन यूँ ही
तो एक दिन साँस लेने के लिए हम छटपटायेंगे[10]

दिल्ली जैसे महानगर में वायु का दर्जा निर्देशांक (AQI) 400 से उपर है जिससे दिल्ली शहर गॅस चेंबर जैसे बन चुका है। कार्बन डायऑक्साईड, मिथेन जैसे घातक उत्सरजन से स्कूलों को बंद करना, वर्क फॉर्म होम, पानी के फव्वारों का उपयोग करना, ॲण्टी फॉग मशिन लगवाने जैसे उपाय किये जा रहे है। अगर इसके बदले हमने मौसम के साथ प्रेमभरा रिश्ता निभाया तो -

जरा एक पल दिल लगाकर तो देखो
जनम भर ये रिश्ता निभाता है मौसम[11]

प्रकृति के –हास से जैवविविधता का खतरा तो है साथ ही मानव निर्मित विविध उद्योगधंदों का बढना, थर्मल पॉवर प्लॅट का बढना गाडियों से निकलनेवाला धुवाँ, फ्रिज, एअर कंडिशनरों से निकलनेवाली गॅस आदि से पूरा पर्यावरण ही खतरे में हैं – जैसे

हमारी निठुरता भरी बेरूखी से
बहुत दूर तक छटपटाता है मौसम[12]

आज धडल्ले से विकसित हो रही बाजारवादी प्रवृत्ति के कारण मनुष्य स्वार्थी और भोगी बन रहा है, अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए प्रकृति को नुकसान पहुँचा रहा है। प्रदूषण के कारण हम विविध बिमारियों के शिकार हो रहे है। जल, वायु, ध्वनि, मृदा प्रदूषण के साथ-साथ किरणोत्सर्गी प्रदूषण से हमारा स्वास्थ खराब होते जा रहा है। हमे अब अत्याधिक सजग होने की जरूरत है। सचेत करते हुए वशिष्ट जी लिखत हैं –

हमारे बिना तुम भी जी ना सकोगे
ये एहसास हमको कराता है मौसम[13]

भारत में आदिवासी समाज के लोग वनस्पतियों को देवता मानकर पूजते है। हमारी वृक्ष संपदाओं को बचाने के लिए 'चिपको आंदोलन' मुंबई का 'आरे बचाव' आंदोलन चलाया गया। धरती को माता माना जाता है। धरती जैसे हमें जिन्दा रहने के लिए खाना-पानी देती है वैसे मृत्यु पश्चात वहीं हमें अपने गोद में भी सुलाती है इसलिए धरती को, पेड-पौधों को अपने पर्यावरण को बचाना हमारी जिम्मेदारी है। केवल ग्रेटा थनबर्ग जैसी युवती इसे बचा लेगी यह केवल भ्रम है। पर्यावरण को बचाना हम सब का कर्तव्य ही नहीं जिम्मेदारी भी है। इसे बचाना ही होगा। जैसे -

वनस्पतियाँ हमारी धरती माँ की सहेली हैं
इन्हें मारा अगर तो माँ के हत्यारे कहलायेंगे[14]

निष्कर्ष -

विकास का चक्र तो निरंतर चलनेवाला है इस विकास के साथ-साथ पर्यावरण की हानि भी निरंतर होती रहेगी। प्रकृति पर अगर हम हमला करेंगे तो वह बदला लेकर रहेगी। मनुष्य ने जो पानी, हवा, जमीन प्रदुषित की है उसका परिणाम तो हमें भोगना ही पडेगा। भूकंप, बाढ, आर्वषण, भुस्खलन, त्सुमानी जैसी आपदाओं का सामना तो करना ही पडेगा।

डॉ. अनूप वशिष्ठ इन सभी समस्याओं से, उससे निर्माण गंभीर परिस्थितियों से हम सचेत करते है। डॉ. अनूप वशिष्ठ अत्यंत संवेदनशील गजलकार है। पर्यावरण उनका प्रिय और चिंता का विषय रहा है। हमें सचेत कराते हुए उन्होंने अपने गजलों का निर्माण किया है।

सारी सृष्टि का आधार प्रकृति है, हम प्रकृति को ईश्वर भी मानते है। जो हम खाते-पिते, ओढते, पहनते है सबकुछ हमें प्रकृति ही देती है। प्रकृति को बचाना ही होगा। हम पर्यावरण अर्थात प्रकृति के साथ जो व्यवहार कर रहे हैं वह चिंता की बात है। इस कुचक्र से बाहर निकलकर हमारे पर्यावरण की रक्षा खुद अपने से ही शुरू करनी होगी तभी हम अगली पीढी को कुछ दे सकेंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. रेखा मधुवाल – पर्यावरण और प्रदूषण – आवरण से गुंजन प्रकाशन दिल्ली – प्र. सं. 2007
2. डॉ. अनूप वशिष्ठ – मशाले फिर जलाने का समय है पृ. 71
3. राजसूर्य प्रकाशन दिल्ली – प्र. सं. 2013
4. https://www.kailasheducation.com
5. डॉ. अनूप वशिष्ठ – रोशनी खतरे में है पृ. 27 उद् भावना प्रकाशन दिल्ली, प्र. सं. 2006
6. वहीं पृ. 50
7. वहीं पृ. 50

8. वहीं पृ. 27
9. वहीं पृ. 27
10. वहीं पृ. 33
11. वहीं पृ. 27
12. वहीं पृ. 48
13. वहीं पृ. 49
14. वहीं पृ. 49
15. वहीं पृ. 27